नव जवनों के नाम

मौलाना अबुल हसन अली नदवी
(अली मियाँ)

मजलिसे तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम
नदवा, लखनऊ (भारत)

www.abulhasanalinadwi.org

प्रकाशक :

एकाडमी आफ़ इस्लामिक रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन,
पोस्ट बाक्स नं० 119 नदवतुलउलमा लखनऊ

क्रम संख्या–281

प्रथम संस्करण–1998

मूल्य ५/-

मुद्रक
नदवा प्रेस लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

दो शब्द

महान विचारक, लेखक और इतिहासकार श्रद्धेय मौलाना अबुल हसन अली नदवी (अली मियां) ने अक्टूबर 1982 में हैदराबाद के विभिन्न जलसों में कई तक़रीरें की। इन उदबोधनों का उद्देश्य पढ़े-लिखे नव जवानों को उनकी ज़िम्मेदारी का एहसास दिलाना था। इसी शृंखला का एक उद्‌बोधन 13, अक्टूबर, 1982 को सायंकाल "मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टीटयूट, हैदराबाद" में हुआ, जिसका सरल हिन्दी में अनुवाद "नव जवानों के नाम" शीर्षक से यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

आशा है युवा पीढ़ी इसके अध्ययन से लाभान्वित होगी और इससे देश और समाज को फ़ायदा पहुँचेगा। समाज में व्याप्त बुराइयाँ दूर होंगी और देश ख़ुशहाल बनेगा।

अनुवादक
मो० हसन अंसारी
24 मार्च, 1997

www.abulhasanalinadwi.org

www.abulhasanalinadwi.org

: बिस्मिल्लाहिर्रहमाननिर्रहीम :

सज्जों ! मैंने आपके सामने कुर्आन शरीफ़ की एक आयत पढ़ी है। ख़ुदा के पैग़म्बर शुऐब अलै० ने अपनी क़ौम से कहा, मेरी कौम के लोगो ! अल्लाह की ज़मीन में सुधार के बाद ख़राबी और फ़साद न फैलाओ। यह इस आयत का अर्थ है। उनके यह शब्द कितने सरल किन्तु कितने भाव भरे और दर्द में डूबे हुए हैं। आम तौर पर कहा जाता है, भाइयो ! फ़साद न मचाओ, अव्यवस्था न फैलाओ। लेकिन हज़रत शुऐब अलै० ने फ़रमाया, "और इस धरती पर सुधार के बाद ख़राबी न करो"। जब ईश्वर की धरती, उसके किसी देश में समाज सभ्यता और मानव जीवन की चूल बिठाने, उसको अपनी जगह लाने, इन्सानों का रिश्ता अपने मालिक से मज़बूत करने, मानव जाति के बीच सम्बन्धों को सुधारने, दूसरों के अधिकार और अपने कर्तव्यों को स्वीकार करने, इन्सानी जान व माल के आदर और सद्व्यवहार का पाठ पढ़ाया गया हो, और ईश्वर के भक्तों ने बड़ी संख्या में, और कभी कभी पूरे देश और पूरी-पूरी कौम ने किसी भूभाग में इसको स्वीकार कर लिया हो तो ख़ुदा के लिये इसके बाद इन प्रयासों पर पानी न फेरो। इस वट वृक्ष को खून पसीना से सींचा गया, इसके ख़ातिर अपने परिवार और स्वाभिमान की बाज़ी लगा दी गई, दुनिया के तमाम फ़ायदों से आखें बन्द कर ली गईं। एक ही सच्चाई को

www.abulhasanalinadwi.org

याद रखा गया कि ज़मीन पर आदमियों को आदमियों की तरह और ख़ुदा के बन्दों की तरह रहना सिखाया जाये, जिस तरह कि माला के दानों को माला में, या हार के मोतियों को हार में, गून्ध दिया जाता है, इसी प्रकार मानव वंशज के लोगों को इन्सानी भाईचारे के धागे में गून्ध दिया गया है। ख़ुदा के लिये इस धागे को न तोड़ो वरना यह दाने बिखर जायेगें और इतिहास साक्षी हैं कि यह दाने जब इन्सानी भाईचारे के इस रिश्ते को छोड़ते हैं तो सिर्फ बिखरते नहीं बल्कि एक दूसरे से टकराते हैं, इनमें चुम्बक की आकर्षण शक्ति के विपरीत एक ऐसी बिखराव की शक्ति उत्पन्न हो जाती है जिस प्रकार लहरें लहरों से टकराती हैं। उसी प्रकार यह दाने बिखरने के बाद सिर्फ यह नहीं कि मिट्टी में मिल जाएँ, वह जमा होकर, और जिसको जितना मौक़ा मिलता है, अपने क़रीब के दानों को जमा करकेदूर के दानों से आकर टकराता है। मैने एक जगह कहा था कि नफ़रत व भय (वहशतें) नफ़रत ही से नहीं टकरातीं, एकता भी एकता से टकराती हैं, वह एकता (वहदत) जिसका आधार ग़लत है, वह वहदत जो इन्सानी भाईचारा और ईश-भक्ति पर क़ायम नहीं, जो अधिकार व कर्तव्य के सन्तुलन, ख़ुदा के ख़ौफ़, इन्सानी जान व माल के समादर पर कायम नहीं, वह वहदत व एकता ख़तरनाक है, जो दाना अपनी लड़ी से जुदा हो जाये वह अपनी सीमा में सीमित नहीं रहता, वह टकरायेगा जरुर। पैग़म्बरों ने हमेशा यह कोशिश की कि तस्वीह़ के यह दाने तस्वीह की लड़ी में पिरोये रहें, टूटने न पायें। शैतान ने कोशिश की कि यह दाने बिखरें। हज़रत

www.abulhasanalinadwi.org

शोऐब के इस कथन में बड़ा दर्द और दिल की तड़प नज़र आती है । ख़ुदा के पैग़म्बरों ने सदियों के कार्य में इन्सान को इन्सानियत का सबक़ पढ़ाया, और इन्सान बनकर रहना सिखाया । उन्होने कहा कि तुम्हारी यह तारीफ़ नहीं कि मछलियों की तरह पानी में तैरो, चिड़ियों की तरह हवा में उड़ो, शेर की तरह डकारो, और भेड़िये की तरह फाड़ो । तुम्हारी तारीफ़ यह है कि ख़ुदा के बन्दों की तरह ख़ुदा की ज़मीन पर चलो । ज़मीन ख़ुदा की, तुम खुदा के, फिर सरकशी कहां से आई ? उन्होंने फ़रमाया "ज़मीन के दुरुस्त हो जाने के बाद उसमें बिगाड़ न पैदा करो । इस्लाह और सुधार के लिये एक सुधारक चाहिए, प्रयास चाहिए, बुलावा चाहिए, अल्लाह की मदद चाहिए । "इस्लाह" शब्द में यह सब चीज़ें आ गई । पैग़म्बरों का पूरा इतिहास आ गया । जब ख़ुदा ने पैग़म्बरों और इन्सानियत की पीड़ा रखने वालों ने और उसका इलाज करने वालों ने अपने सफल प्रयासों से इस धरती को स्वर्ग का नमूना बना दिया, यहाँ इन्सान इन्सान पर जान देने के लिए तैयार हो गये, लुटेरे रक्षक और दानव मानव बन गये, त्याग व बलिदान के ऐसे नमूने दुनिया के सामने आये कि यदि इतिहास साक्षी न हो और इनकी निरन्तरता न हो तो इनका विश्वास करना सम्भव नहीं था ।

ख़ुदा की निगाह में बड़ा जुर्म और ख़ुदा के पैग़म्बरों और समाज सुधारकों की निगाह में बड़ा ज़ुल्म है कि किसी समाज को, जिसके हर व्यक्ति का भाग्य दूसरे व्यक्ति से जुड़ा है, अपने व्यक्तिगत स्वार्थ और संकीर्ण दृष्टिकोण के कारण तहस-नहस

www.abulhasanalinadwi.org

कर दिया जाये । अगर कोई ख़राबी किसी सोसाइटी अथवा देश में पैदा हो, और आदमी समझे कि हमारी बला से, हमारा क्या बिगड़ता है, अमुक मुहल्ले में, अमुक बिरादरी में शहर के अमुक हिस्से में देश के एक राज्य में अगर आदमी आदमी को मार रहा है, लोगों के घर जलाये जा रहे हैं, इक्का दुक्का मुसाफिर को छुरा घोपा जा रहा है, तो क्या हर्ज है । हमारे सीमित क्षेत्र में तो कोई बात नहीं । इस वस्तुस्थिति और इस सोच का जो नतीजा होगा, उसकी मिसाल मुझे सुधारात्म साहित्य ही में नहीं, मानव साहित्य में भी इससे बेहतर नहीं मिली जो एक सही हदीस में दी गई है । हमारे नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि एक नवका पर मुसाफिर सवार है, इसमें दो वर्ग हैं, एक अपर एक लोवर । कुछ मुसाफिर अपर क्लास में हैं, कुछ लोवर क्लास में जो आमतौर से ग़रीव लोग होते हैं । मीठे पानी की व्यवस्था ऊपर की गई है, अपर क्लास वालों का ध्यान भी अधिक रखा जाता है । नीचे वाले मजबूर है कि पानी लेने के लिये ऊपर जायें । वहाँ से पानी लाते हैं । पानी का स्वभाव है कि छलकता है, फिर नवका गतिशील है, हिचकोले लेती है । लोगों की हज़ार सावधानी के बावजूद पानी छलकता है । पानी पहचानता नहीं कि यह फ़लाँ अमीर साहव बैठे हैं, यह अमुक नवाब साहव के कपड़े फैले हुए हैं । एक बार हुआ, दो बार हुआ, चार बार हुआ । अन्ततः अपर क्लास के इन यात्रियों से सहन नहीं हो सका और उन्होने कहा, "साहब ! यह तमाशा हम नहीं देख सकते । पानी यह ले जायें और परेशान हम हों ? हम पानी नहीं ले जाने देगें । अपनी

www.abulhasanalinadwi.org

व्यवस्था करो"। नीचे वालों ने कहा "पानी के बिना तो गुजारा नहीं, अगर हम ऊपर से नहीं ला सकते तो हम नीचे ही सूराख कर लेते हैं। बैठे ही बैठे अपने बर्तनों में पानी भर लिया करेंगे। अब हमें इनकी खुशामद नहीं करनी पड़ेगी। हमारे नबी सल्ल० फ़रमाते हैं कि अगर इन अपर क्लास वालों की अक्ल पर पत्थर नहीं पड़ा है और इनकी शामत नहीं आई है तो वह खुशामद करेगें कि नहीं भाई तुम ऊपर ही से पानी ले जाओ लेकिन खुदा के लिये यह गजब न करो कि नीचे सूराख कर लो। इसलिये कि नवका डूबेगी तो फिर सबको लेकर डूबेगी न अपर क्लास वाले बचेगें और न लोवर क्लास वाले।

हमको आपको सबको बज़ाहिर (प्रत्यक्षत) इसी मुल्क में ज़िन्दगी गुज़ारनी है, लेकिन यह सभ्यता मानव समाज की नवका है, और हम सब एक ही नाव के सवार हैं। यदि हमने स्वार्थ से काम लिया, और अपने-अपने घर में मीठे पानी का इन्तिज़ाम सोच लिया तो फिर खैरियत नहीं। वह मीठा पानी क्या है ? यह कि हमारा स्वार्थ पूरा हो जाये, हमारा काम निकल जाये। फिर हमें दूसरे से मतलब नहीं। यह नवका में सूराख करने ही के समान है। आज हमारे मुल्क की नवका में कितने सूराख किये जा रहे हैं। हर व्यक्ति अपने सीमित स्वार्थ को देखता है, उसने दूसरों से अपनी आखें बन्द कर रखी हैं और इस सच्चाई को भुला दिया है कि इसका समुदाय पर क्या प्रभाव पड़ता है। आज भारत ही का नहीं सारी दुनिया का रोग यही है।

www.abulhasanalinadwi.org

बेरुत में जो कुछ हुआ वह इसी संकीर्ण दृष्टिकोण का नतीजा था। इज़राईल ने समझा कि मौक़ा अच्छा है। इस वक्त हमें अपना काम निकाल लेना चाहिए। इससे बहस नहीं कि अपने स्वार्थ की पूर्ति की इस बलि वेदी पर कितने आदमी भेंट चढ़ जाते हैं। इन्सानियत की क्या गति बनती है। वहाँ के "फिलाँजिस्ट" ने यह समझा कि यह समय है जब एक बड़ी ताकत की छत्रछाया हमको प्राप्त है। हम इस छतुरी के नीचे हैं, इसलिए हमें अपना काम कर लेना चाहिए। यह तो एक भयानक और अनुचित रुप में हुआ और सारी दुनिया में इसकी निन्दा की गई। लेकिन इससे कम दर्जे की शक्ल में हमारे देश में भी यही हो रहा है कि विभिन्न वर्ग, विभिन्न बिरादरियाँ, भारतीय समाज के विभिन्न अंग, अपने स्वार्थ की पूर्ति में लगे हुए हैं। बिरादरी वाला बिरादरी के आदमी को प्राथमिकता देगा, चाहे कितना ही अयोग्य हो। भाई भतीजे वाद को हमारे समाज में दौर दौरा है। खुदा के पैगम्बरों ने दुनिया को अमन का सबक दिया था। दुनिया की कौमों और कौमों के लोगों को मानव एकता की लड़ी में पिरो दिया था। यदि आप उदार दृष्टिकोण और ईमानदारी के साथ पता लगायेंगे और कड़ी से कड़ी मिलायेंगे तो मालूम होगा कि दुनिया में अब भी इन्सानियत का जो बचा खुचा सरमाय: है, प्रेम और भाईचारे की दिलों में जो चाश्नी है, अमन व अमान और खुदा के डर का मानव जीवन पर जो प्रतिविम्ब है, इन्सानी जान व माल और इज्ज़त व नामूस (मान-मर्यादा) की निगाहों में जो क़ीमत रह गई है, वह खुदा के पैग़म्बरों, फिर उनके काम को ज़िन्दा रखने वाले

www.abulhasanalinadwi.org

सहृदय लोगों की मेहनत का नतीजा और प्रयासों का फल है। छठी शताब्दी ईस्वी में मानवता बर्बादी और सामूहिक आत्म-हत्या की गहरी और भयानक खँदक के किनारे पहुँच चुकी थी, और छलाँग लगाना ही चाहती थी कि ईश्वर के एक भक्त हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अभ्युदय होता है। और जैसा हमारे नबी सल्ल० ने स्वयं एक मौक़े पर फ़रमाया कि "मेरी और तुम्हारी मिसाल ऐसी है कि जैसे किसी ने आग रोशन की और उस पर पतिंगे दीवानावार टूटने लगे, इसी तरह तुम आग पर गिरना चाहते हो, और मैं तुम्हारी कमर पकड़-पकड़ कर उससे हटाता हूँ। आप मानव इतिहास देखेंगे, अनेक बार ऐसा हुआ है कि इन्सान एक खूँख्वार जानवर बनकर रह गया है। खुदा का कोई पैग़म्बर कोई ईश दूत आया और उसने दानव को मानव, और लुटेरे को रक्षक, और दरिन्दे को गल्ले का रखवाला बना दिया। निरक्षरों और मानवत से अपरिचितों को नैतिकता का गुरु, विधाता और संसार का मार्गदर्शक बना दिया।

हमारे देश भारत में भी प्रेम का जो बचा खुचा सरमाय: पाया जाता है वह इन्हीं सूफी सन्तों की देन है जो प्रेम का सन्देश लेकर आये थे। हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रह० का कथन है कि देखो अगर किसी ने एक काँटा रख दिया तो काँटे ही काँटे हो जायेगें। काँटे का इलाज काँटा नहीं। काँटे का इलाज फूल है। एक मौक़े पर फ़रमाया कि लोगों का क़ायदा तो यह है कि "टेढ़े के साथ टेढ़ा और सीधे के साथ सीधा"। और हमारा उसूल यह है कि "सीधे के साथ सीधा और टेढ़े के

www.abulhasanalinadwi.org

साथ भी सीधा"। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रह० और उन से भी पहले इस देश में आने वालों में हज़रत अबुल हसन अली हिजवेरी से लेकर इस सिलसिले के सही जानशीनों तक के हालात जहाँ तक देखेंगे, हर जगह प्रेम की क्षिशा मिलेगी, थके हारे इन्सानों की दिलजोई, शान्त्वना सहृदयता और सद्भाव। उन्होंने यह पाठ पैग़म्बरों ही की शिक्षा और चरित्र से सीखा था, फिर हर देश में जाकर सिखाया। इसी प्रेम से उन्होंने दिलों को जीता।

"जो दिलों को फ़तेह कर ले वही फ़ातेह ज़माना"

वह अपनी मुहब्बत से घायल नहीं कि यह उनके साथ नाइन्साफ़ी है। घायल तो करें तीर कमान वाले वह क़ायल और दिल से मायल (अर्कषित) कर लेते थे और फिर लोग उनको अपने माँ-बाप, परिवार के मुखिया और ख़ूनी रिश्तों पर प्राथमिकता देने लगते थे। शेख अहमद खट्टू जिनके नाम पर अहमदाबाद शहर का नाम रखा गया, जब दूध पीते बच्चे थे दिल्ली में एक तूफान और तेज़ आँधी में अपनी दायी से छूटकर कहीं से कहीं पहुँच गये थे, फिर उनको एक क़ाफिले ने जो वहाँ से गुज़र रहा था, एक सन्त के पास खट्टू गुजरात पहुँचा दिया था। वर्षों के बाद जब वह युवावस्था को पहुँच गये तो उनके घर के लोग किसी प्रकार पता लगाकर खट्टू पहुँचे और उनके गुरु से मिले। गुरु ने कहा, "नवजवान को अख्तियार है वह चाहे यहाँ रहे, चाहे अपने घर जाये"। शेख अहमद ने घर और माता-पिता पर और दिल्ली के सुखमय जीवन पर यहाँ की दरिद्रता को प्राथमिकता दी, और वहीं के होकर रह गये।

इस समय मुसलमानों की यह ज़िम्मेदारी है की वह खड़े

www.abulhasanalinadwi.org

हों, और मुल्क को तबाह (नष्ट) होने से बचायें। यह अकेले हुकूमत की ज़िम्मेदारी नहीं है। उसके साथ बीसियों उलझनें और सियासी (राजनीतिक) मसलहतें लगी हुई हैं। कुरआन की रोशनी में यह आप का कर्तव्य है कि आप धर्म के सच्चे अह्वान करने वालों, मानवता के शुभ चिंतकों और देश व समाज के निष्ठ निर्माताओं की मेहनतों पर पानी न फेरने दीजिये "ज़मीन पर (धरती पर) सुधार के बाद ख़राबी न करो"। का सन्देश देते रहिये। ख़ुदा के यहाँ आपसे सवाल होगा कि तुम्हारे होते हुए यह मुल्क कैसे तबाह हुआ। तुम्हे ऐसा किरदार (आचरण) और नमूना पेश करना चाहिए था कि लोग समझते कि पैसा ही सब कुछ नहीं होता, पद ही सब कुछ नहीं होता, इज्ज़त ही सब कुछ नहीं होती। ख़ुदा का डर असल चीज़ है, फिर प्रेम और लोगों के साथ हमदर्दी और सहृदयता। मुझे विश्वास है कि आप यह नमूना दिखाकर लोकप्रियता का स्थान प्राप्त कर लेंगे, हमने व्यक्तियों के लोकप्रिय बनने की घटनायें तो किताबों में पढ़ी हैं, और हमें याद हैं, लेकिन मिल्लतों (समुदायें) के प्रिय बनने की घटनाओं से हम उदासीन हैं। ख़ुदा ने इस मिल्लत को, जब उसने इन्सानियत को बचाने और चमकाने के लिए अपने स्वार्थ का त्याग किया और हक़ व सच्चाई पर डटी रही, लोकप्रिय बना दिया था। चीन से अरब को पैगाम गया। वह चीन जो अरब से बहुत दूर है। चीन से अब्बासी सल्तनत के पास पैग़ाम आता है कि यहाँ कोई ऐसा आदमी नहीं जिस पर हम पूरे तौर पर इतमिनान कर सकें, और वह मुकदमों का निष्पक्ष फैसला कर सके। ख़ुदा के लिये

www.abulhasanalinadwi.org

आप वहाँ से कुछ आदमी भेजिये जो यह काम करें। यह उस समय का हाल है जब मिल्लत "यह उम्मत लोगों की भलाई के लिये है," पर विश्वास रखती थी। उसका विश्वास था कि हम अपने स्वार्थ की पूर्ति, पारिवारिक खुशहाली और जाति की समृद्धि के लिए नहीं पैदा किये गये हैं, मानवता के कल्याण और उसकी सेवा के लिए पैदा किये गये हैं। आपने सुना होगा कि सेनापति अबू उबैदह के नेतृत्व में जो इस्लामी फ़ौज हमस (सीरिया) में तैनात थी, और रोमियों के मुक़ाबले में मोंचे पर थी। खलीफ़ा के दारबार से हुक्म आया कि तमाम इस्लामी फ़ौज "यरमूक" के मोंचे पर जमा हो जाये। वहाँ एक निर्णायक लड़ाई होने वाली है। सेनापति अबू उबैदह ने हुक्म दिया कि इस्लामी फ़ौज यहाँ से कूच करे और जो जिज़या (सुरक्षा व्यवस्था टैक्स) नगर के ग़ैर मुस्लिम आबादी से वसूल किया गया है, वह वापस कर दिया जाये। कोषाधिकारी को हुक्म दिया गया कि एक पैसा रहने न पाये। जब यहूदियों और ईसाइयों को उनसे वसूल की हुई रक़म वापस की गई तो उन्होने पूछा कि ऐसा क्यों किया जा रहा है? सेनापति ने उत्तर दिया कि यह रक़म इस बुनियाद पर वसूल की गई थी कि हम आप की हिफ़ाज़त (सुरक्षा) करेंगे। अब इस समय हम सुरक्षा करने की पोज़ीशन में नहीं हैं। हम इस स्थान को छोड़कर दूसरे मोंचे पर जा रहे हैं। मालूम नहीं फिर कब आना नसीब हो। इसलिए हमें इसके रखने का हक नहीं है। इतिहासकारों ने लिखा है कि लोग रोते थे कि ख़ुदा तुमको फिर वापस लाये वह उनको अपने पुराने शासकों पर प्राथमिकता देते थे और कहते थे कि वह हमीं से पैसा लेते थे और हमारा ही खून पीते थे। और

www.abulhasanalinadwi.org

तुम्हारा मामला हमारे साथ यह है। इस मिल्लत की लोकप्रियता की आप कितनी घटनायें सुनेंगे। आप देखेंगे जिधर से मुसलमान गुज़र जाते थे, वहाँ के लोग आँखें बिछाते थे कि यह रहमत के फ़रिश्ते हैं। इनके आने से महामारी दूर होगी, माल व फ़सल में बरकत होगी। हमारे यहाँ के विवाद समाप्त होगें। ख़ुदा की रहमत व बरकत बरसेगी। सदाचरण, प्रेम और न्याय व इन्साफ़ से "बरबर" जैसी अजेय कौम को, जिसको रोमन साम्राज्य ने भी अजेय समझकर छोड़ रखा था, इस्लाम के दायरे में ला खड़ा किया और उसे अरबी सभ्यता व संस्कृति और साहित्य का ऐसा आशिक़ बना दिया कि फ्राँसीसी हुकूमत की सब तदबीरें (उपाय) और कोशिशें नाकाम हो गई।

सज्जनों! अभी तक हमने मिल्लत के प्रिय बनने के विषय पर गम्भीरता से विचार नहीं किया। असल में प्रिय बनाने वाले गुण हैं। ये गुण यदि व्यक्ति में पैदा हों तो मिल्लत महबूब (प्रिय) बन जाये। आज हिन्दुस्तान में मुसलमानों के लिए इसके अलावा इज्जत व क़ियादत का कोई रास्ता नहीं।

निष्ठा, त्याग और सेवा की भावना प्रिय बनाने वाले गुण हैं। हुकूमतें इसकी छत्र-छाया में चलती हैं। सभ्यता और संस्कृति इसका रिकाब थामती और इस पर गर्व करती हैं। अगर यह नहीं है तो न हुकूमत का भरोसा है, न पद का, न राजनीतिक सूझबूझ और जोड़ तोड़ का। आज ज़रुरत है कि हमारे मुसलमान नवजवान यह साबित करें कि हम में अधिक क्षमता (इफिसियन्सी), हम में जिम्मेदारी का अधिक एहसास हम में अधिक कर्तव्य निष्ठा और ईमानदारी है। हम को अगर

www.abulhasanalinadwi.org

लाखों रुपये की रिश्वत दी जाये और हमको रुपये की सख्त ज़रूरत हो, तो हम इसको हाथ लगाना भी हराम समझेगें, बल्कि रिश्वत पेश करने वाले से कहेगें कि तुमने मेरी और मेरे मिल्लत की तौहीन की, तुम्हें यह कैसे विचार आया कि कोई मुसलमान रिश्वत ले सकता है। तुम्हारा चेहरा यह बताये कि जैसे तुम्हें किसी ने गाली दे दी। मुसलमान जीवन के जिस मोर्चे पर भी हो वह आचरण का एक नमूना साबित हो। वह अपने अमल (कर्म) से साबित कर दें कि उसको कोई व्यक्ति या पार्टी बल्कि हुकूमत भी ख़रीद नहीं सकती। मिल्लत की स्थाई समस्या आचरण (किरदार) ही से हल होगी। कुर्आन कहता है :–

तर्जुमा :– "खुदा उस (नेमत) को (जो किसी क़ौम को हासिल है) नहीं बदलता जब तक कि वह अपनी हालत को न बदले"। (सूर : रअद–11)

हमारी सत्ता हमारी ग़लतियों से गई। हमने अपना हक़ और विश्वास अपनी ग़लतियों से खोया। हम इसको फिर अपनी क्षमताओं से हासिल कर सकते हैं। इसमें दुनिया की कोई क़ौम मदद नहीं कर सकती। लिबनान व फ़िलिस्तीन के अरबों ने धोखा खाया। किसी ने रूस पर भरोसा किया किसी ने अमरीका पर। लेकिन खुदा ने साफ़ कह दिया है कि शैतान वक्त पर दगा देता है। बेरुत और आस पास के अरब मुँह देखते रह गये, और कोई काम न आया। उनको खुदा पर, अपनी धार्मिक शिक्षा पर, अपनी क्षमता पर, अपने प्रयास और अपने सद आचरण पर भरोसा करना चाहिए था। यह कहना कि

www.abulhasanalinadwi.org

हमारा भाग्य अमुक से जुड़ा है, सही नहीं । मुसलमानों का खुदा के सिवा कोई नासिर (मददगार) और हामी नहीं। इसके बाद अगर कोई चीज़ मदद कर सकती है तो अपनी सलाहियत (क्षमता), अपनी विशिष्टता, अपनी उपादेयता (यूटीलिटी) । आप यह साबित करें कि आप मुल्क की जरुरत है । मुल्क आप के बिना सही तरीके पर चल नहीं सकता और उसकी नवका राजनीतिक, साम्प्रदायिक और व्यक्तिगत स्वार्थों के तूफ़ान से, झँझावत से, जो दौलत परस्ती, ताकत परस्ती, तँगनज़री, और खुदा ना शनासी (नास्तिकता) ने पैदा कर दिये हैं, बचकर किनारे नहीं लग सकती और अपने लक्ष्य पर नहीं पहुँच सकती ।

आप लोगों में अब भी उन लोगों की बड़ी तादाद होगी जिन्होंने आसिफ़िया सल्तन्त का पुराना दौर देखा है उनको रह रह कर उस दौर की याद सताती होगी । मैं कहता हूँ अब उसको याद करके अफ़सोस करने की जरुरत नहीं । अब एक नये जीवन की शुरुआत और एक नये युग का शुभारम्भ कीजिये ।

"सबक़ फिर पढ़ शुजाअत का सदाक़त का अदालत का
लिया जायेगा तुझसे काम दुनिया की इमामत का" ।

दुनिया ख़ैर उम्मत की इमामत (नेतृत्व) के बिना सही तरीके पर चल ही नहीं सकती । पूरा इतिहास इसका साक्षी है । दानवता और ताक़त व दौलत के बल पर हुक्मरानी को चलना नहीं कहते । क्या अमरीका चल रहा है ? क्या रुस चल रहा है ? जिसके शासन काल में जिसकी हिमायत व हिफ़ाज़त

www.abulhasanalinadwi.org

में इतना बड़ा अन्धेर हो जैसा बेरुत में हुआ। क्या खुदा इससे खुश हो सकता है ?

इन दोनों को अपने किये का खुदा के सामने जवाब देह होना पड़ेगा। उन्होने इन्सानी कौमों को बिल्कुल जँगल का शिकार समझ लिया है। उनके लिए भी एक लेखे जोखे का दिन होगा। और वह कुछ दूर नहीं। जो चीज अपनी उपादेयता खो चुकी है उसके लिए बका (सर्वाइवल) नहीं। यूरोप तो "सर्वाविल आफ दि फ़िटेस्ट" (अर्थात जो सर्वाधिक फिट है वही बाकी रहेगा) के सिद्धान्त तक पहुँचा है लेकिन कुर्आन कहता है :–

तर्जुमा :–"सो झाग तो सूखकर नष्ट हो जाता है और (पानी) जो लोगों को फायदा पहुँचाता है, वह ज़मीन में ठहरा रहता है। इस प्रकार खुदा मिसालें वयान फ़रमाता है (तार्कि) तुम समझो"। (सूर रअद–17)

इतिहास वताता है कि किसी नेशन का नैतिक पतन पहले शुरु होता है, राजनीतिक पतन बाद में आता है। यूनान, रोम, सासानी सल्तनत, प्राचीन भारत और इस्लामी सल्तनतों का इतिहास इसका साक्षी है। हमारे देश के ज़िम्मेदारों, राजनीतिक पार्टियों के लीडरों, शिक्षण संस्थाओं के ज़िम्मेदारों, देश के प्रबुद्धवर्ग को यथार्थवादी तथा उदार दृष्टिकोण से देश के हालात का जायज़ा लेना चाहिए। और इस भयानक नैतिक पतन से काँप जाना चाहिए, जिसने पूरे देश को अपनी लपेट में ले लिया है और जिससे यह बात स्पष्ट सामने है कि इस देश में केवल

www.abulhasanalinadwi.org

पैसा, पद, जाति बिरादरी और राजनीतिक उद्देशों की पूर्ति ही हक़ीक़त है बाकी मात्र दर्शन-शास्त्र, धार्मिक लोगों की सरलता और उपदेशकों की लफ्फ़ाज़ी है। फिर इससे भी ज्यादह ख़तरनाक बात यह है कि इतने लम्बे चौड़े मुल्क में रासकुमारी से लेकर श्रीनगर तक, यह आवाज बुलन्द करने वाला कोई नहीं, यह कहने वाला कि आचरण दुरुस्त करो, इन्सानियत का सबक पढ़ो, देश को बचाओ, कोई नहीं। यह कहने वाले हजार हैं कि हमारी पार्टी में आओं, अमुक का नेतृत्व स्वीकार करो। इसकी शिकायत नहीं कि जो कुछ हो रहा है ग़लत हो रहा है। सबकी माँग यह है कि जो कुछ ग़लत सही होना है हमारे झडें के नीचे और हमारी छत्र-छाया में हो। दिल का यह दर्द हृदय की यह पीड़ा मैने आपके सामने रख दी, अब आपका, ख़ासकर नवजवानों का काम है कि इससे फ़ायदह उठायें। स्वयं बचें और देश को बचाये।

"ले अपने मुकद्दर के सितारे को तू पहचान"।

-00000-

www.abulhasanalinadwi.org

यह किताबें अवश्य पढ़ें

★ **मानवता का स्तर**

मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी के पाँच महत्वपूर्ण व्याख्यानों का संग्रह, जिसमें यह बताया गया है कि हमारी संस्कृति तथा जीवन में आधारभूत त्रुटियाँ एवं कमज़ोरियाँ क्या हैं, उन्हें किस प्रकार दूर कर सकते हैं।

★ **मानवता का संदेश**

यह पाँच प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण भाषण, जिनके द्वारा मानव जाति की आत्मा को झिंझोड़ा गया है। वर्तमान युग की जटिल समस्याओं को सुलझाने के लिये एक सक्रिय दृष्टिकोण जिसके बिना वर्तमान समाज में व्यापक असंतोष तथा भ्रष्टाचार का समाप्त होना असम्भव है।

★

मजलिसे तहक़ीक़ात व नशरियाते इस्लाम
टैगोर मार्ग नदवा लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org